

Vraja Gitih

——
ब्रजगीतिः

——
Document Information



Text title : Vrajagitih

File name : vragItiH.itx

Category : misc, sanskritgeet, aShTaka, krishna

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudevakrishna Chaturvedi

Latest update : August 11, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 12, 2021

sanskritdocuments.org



ब्रजगीतिः



कलि-कल्मष-पुञ्ज विनाशकरं
बहु जन्म पवित्र प्रकाशकरम् ।
ब्रज, सद्ब्रज मञ्जु निकुञ्ज गृहं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ १ ॥

रस-रास-विलास परं रमणं
सुखदं जन-तापहरं विमलम् ।
ब्रज शेष-महेश-मुनीन्द्रनुतं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ २ ॥

तुलसीदल-गन्ध-धृतं निखिलं
ब्रजराज कुलार्चित-धेनुभरम् ।
ब्रज कंस निषूदन-पुण्यवनं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ ३ ॥

यमराज पितुस्तनया यमुना
सुविराजति यत्र मनः कमना ।
ब्रज, नित्यकिशोर-कथा-कलितं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ ४ ॥

मुरली निनदैर्गृहमध्यलसत्
तरुणीजन-विस्मृत-देहदशम् ।
ब्रज, रास रसेश्वर-रासगृहं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ ५ ॥


“हरिनाम” वचोऽमृतपानपरैः
शुक-हंस-मयूर-खगैश्च युतम् ।
ब्रज, कृष्ण परायण भूमितलं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ ६ ॥

ब्रजवल्लभ-कीर्तन-धन्य-धरं
सफलं भवति ब्रजपुण्यचयम् ।
ब्रज, केशव-केलि-कलाप-कलं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ ७ ॥


बदरीवनमत्र कुशस्थलकं
जगदीशपुरी शिवधामपरम् ।
ब्रज, धाम चतुष्टय पूर्तिकरं
यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥ ८ ॥

इति वासुदेवकृष्णचतुर्वेदी विरचिता ब्रजगीतिः समाप्ता ।

Encoded and proofread by Deepakshi Kumar

——
Vraja Gitih

pdf was typeset on August 12, 2021

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

